JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

रस के प्रकार

हिन्दी • व्याकरण

रस के ग्यारह भेद होते है-

(1) शृंगार रस (2) हास्य रस
(3) करूण रस (4) रौद्र रस
(5) वीर रस (6) भयानक रस
(7) बीभत्स रस (8) अदभुत रस
(9) शान्त रस (10) वत्सल रस
(11) भक्ति रस।

श्रृंगार रस

नायक नायिका के सौंदर्य तथा प्रेम संबंधी वर्णन को श्रंगार रस कहते हैं। **श्रृंगार रस को रसराज या रसपति कहा गया है।** इसका स्थाई भाव रति होता है।

इसके अंतर्गत सौन्दर्य, प्रकृति, सुन्दर वन, वसंत ऋतु, पक्षियों का चहचहाना आदि के बारे में वर्णन किया जाता है।

SuccessCDs

उदाहरण-

कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात,
भरे भौन में करत है, नैननु ही सौ बात

श्रंगार के दो भेद होते हैं

संयोग श्रृंगार

वियोग श्रृंगार

SuccessCDs

संयोग श्रृंगार

जब नायक नायिका के परस्पर मिलन, स्पर्श, आलिगंन, वार्तालाप आदि का वर्णन होता है, तब संयोग शृंगार रस होता है।

उदाहरण-

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नहि जाय।

SuccessCDs

वियोग श्रृंगार

जहाँ पर नायक-नायिका का परस्पर प्रबल प्रेम हो लेकिन मिलन न हो अर्थात् नायक- नायिका के वियोग का वर्णन हो वहाँ वियोग रस होता है।

SuccessCDs

जैसे-

निसिदिन बरसत नयन हमारे,
सदा रहति पावस ऋतु हम पै जब ते स्याम सिधारे॥

SuccessCDs

हास्य रस

हास्य रस मनोरंजक है। हास्य रस नव रसों के अन्तर्गत स्वभावत: सबसे अधिक सुखात्मक रस प्रतीत होता है।
हास्य रस का स्थायी भाव हास है।

SuccessCDs

इसके अंतर्गत वेशभूषा, वाणी आदि कि विकृति को देखकर मन में जो प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है, उससे हास की उत्पत्ति होती है इसे ही हास्य रस कहते हैं।

SuccessCDs

हास्य दो प्रकार का होता है-

1. आत्मस्थ
2. परस्त

आत्मस्थ हास्य केवल हास्य के विषय को देखने मात्र से उत्पन्न होता है, जबकि परस्त हास्य दूसरों को हँसते हुए देखने से प्रकट होता है।

SuccessCDs

उदाहरण-1

बुरे समय को देख कर गंजे तू क्यों रोय। किसी भी हालत में तेरा बाल न बाँका होय।

उदाहरण-2

मैं ऐसा महावीर हूं, पापड़ तोड़ सकता हूँ।
अगर गुस्सा आ जाए, तो कागज को मरोड़ सकता हूँ।।

करुण रस

इसका स्थायी भाव शोक होता है।

किसी अपने का विनाश या अपने का वियोग, प्रेमी से सदैव विछुड़ जाने या दूर चले जाने से जो दुःख या वेदना उत्पन्न होती है। उसे करुण रस कहते हैं।

वियोग श्रृंगार रस में भी दुःख का अनुभव होता है ।

जहाँ पर पुनः मिलने कि आशा समाप्त हो जाती है करुण रस कहलाता है। इसमें निःश्वास, छाती पीटना, रोना, भूमि पर गिरना आदि का भाव व्यक्त होता है।

SuccessCDs

उदाहरण-2

रही खरकती हाय शूल-सी, पीड़ा उर में दशरथ के
ग्लानि, त्रास, वेदना-विमण्डित, शाप कथा वे कह न सके

SuccessCDs

वीर रस

इस रस के अंतर्गत जब युद्ध अथवा कठिन कार्य को करने के लिए मन में जो उत्साह की भावना विकसित होती है उसे ही वीर रस कहते हैं।

SuccessCDs

उदाहरण-2

बुंदेले हर बोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।।

SuccessCDs

आद्याचार्य भरतमुनि ने वीर रस के तीन प्रकार बताये हैं-

1. दानवीर
2. धर्मवीर
3. युद्धवीर

दानवीर

दानवीर के आलम्बन तीर्थ, याचक, पर्व, दानपात्र इत्यादि तथा उद्दीपन अन्य दाताओं के दान, दानपात्र द्वारा की गई प्रशंसा इत्यादि होते हैं।

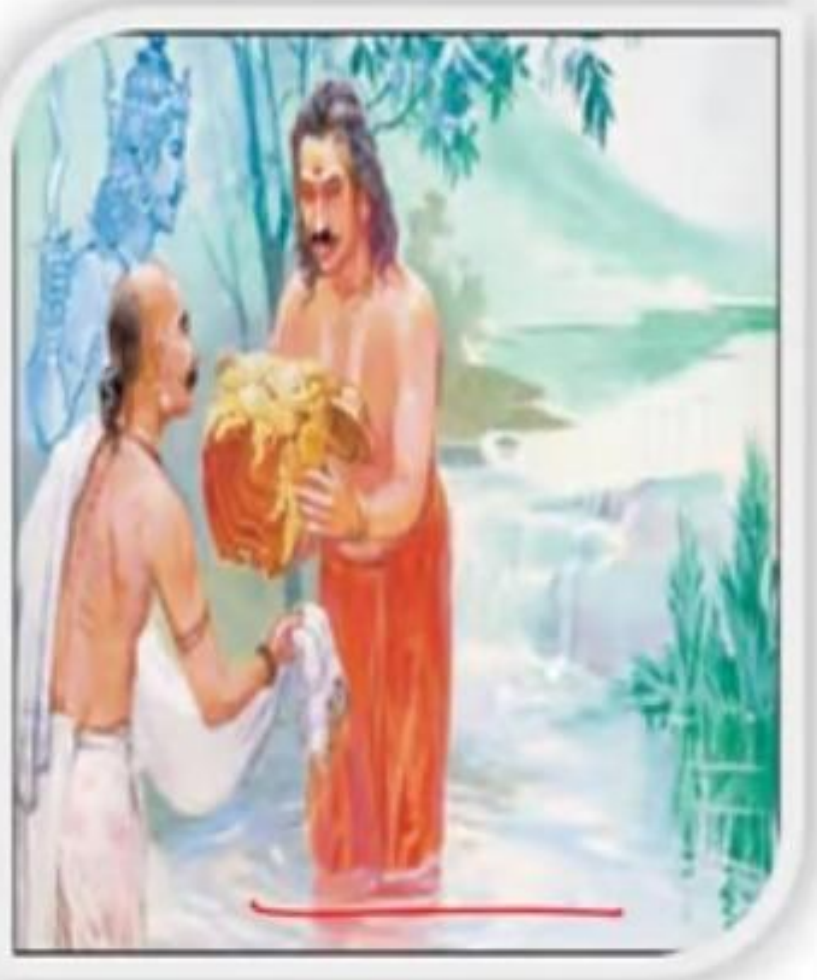

SuccessCDs

धर्मवीर

धर्मवीर में वेद शास्त्र के वचनों एवं सिद्धान्तों पर श्रद्धा तथा विश्वास आलम्बन, उनके उपदेशों और शिक्षाओं का श्रवण-मनन इत्यादि। धर्मधारण एवं धर्माचरण के उत्साह की पुष्टि इस रस में होती है।

SuccessCDs

युद्धवीर

युद्धवीर का आलम्बन शत्रु, उद्दीपन शत्रु के पराक्रम इत्यादि, अनुभाव गर्वसूचक उक्तियाँ, रोमांच इत्यादि तथा संचारी धृति, स्मृति, गर्व, तर्क इत्यादि होते हैं।

रौद्र रस

इसका स्थायी भाव क्रोध होता है।

जब किसी एक पक्ष या व्यक्ति द्वारा दुसरे पक्ष या दुसरे व्यक्ति का अपमान करने अथवा अपने गुरुजन आदि कि निन्दा से जो क्रोध उत्पन्न होता है उसे रौद्र रस कहते हैं।

इसमें क्रोध के कारण मुख लाल हो जाना, दाँत पिसना, शस्त्र चलाना, भौहे चढ़ाना आदि के भाव उत्पन्न होते हैं।

उदाहरण

श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे।
सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे॥

उदाहरण

संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।
करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े॥

SuccessCDs

अद्भुत रस

जब व्यक्ति के मन में विचित्र अथवा आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर जो विस्मय आदि के भाव उत्पन्न होते हैं उसे ही अदभुत रस कहा जाता है।

इसका स्थायी भाव आश्चर्य होता है।

इसके अन्दर रोमांच, औंसू आना, काँपना, गद्गद होना, आँखे फाड़कर देखना आदि के भाव व्यक्त होते हैं।

SuccessCDs

उदाहरण

देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माया।
क्षणभर को वह बनी अचेतन, हिल न सकी कोमल काया॥

SuccessCDs

भयानक रस

जब किसी बुरे व्यक्ति या वस्तु को देखने या किसी दुःखद घटना का स्मरण करने से मन में जो परेशानी उत्पन्न होती है उसे भय कहते हैं उस भय के उत्पन्न होने से जिस रस कि उत्पत्ति होती है उसे भयानक रस कहते हैं।

इसके अंतर्गत कम्पन, पसीना छूटना, मुँह सूखना, चिन्ता आदि के भाव उत्पन्न होते हैं।

इसका स्थायी भाव भय होता है।

एक ओर अजगर हिं लखि, एक ओर मृगराय
विकल बटोही बीच ही, पद्यो मूर्च्छा खाय

बीभत्स रस

इसका स्थायी भाव जुगुप्सा होता है।

घृणित वस्तुओं, चीजो या व्यक्ति को देखकर या उनके संबंध में विचार करके या मन में उत्पन्न होने वाली घृणा या ग्लानि ही वीभत्स रस कि पुष्टि करती है दुसरे शब्दों में वीभत्स रस के लिए घृणा और जुगुप्सा का होना आवश्यक होता है।

दुसरे शब्दों में वीभत्स रस के लिए घृणा और जुगुप्सा का होना आवश्यक होता है।

'विष्टा पूय रुधिर कच हाडा

बरषइ कबहुं उपल बहु छाडा'

(वह कभी विष्ठा, खून, बाल और हड्डियां बरसाता था और कभी बहुत सारे पत्थर फेंकने लगता था।)

शान्त रस

मोक्ष और आध्यात्म की भावना से जिस रस की उत्पत्ति होती है, उसको शान्त रस नाम देना सम्भाव्य है।

इसका स्थायी भाव निर्वेद (उदासीनता) होता है।

शान्त रस साहित्य में प्रसिद्ध नौ रसों में अन्तिम रस माना जाता है - "शान्तोऽपि नवमो रसः।"

उदाहरण -

जब मै था तब हरि नाहिं अब हरि है मै नाहिं
सब अँधियारा मिट गया जब दीपक देख्या माहिं

वत्सल रस

इसका स्थायी भाव वात्सल्यता (अनुराग) होता है। माता का पुत्र के प्रति प्रेम, गुरुओं का शिष्य के प्रति प्रेम, बड़े भाई का छोटे भाई के प्रति प्रेम आदि का भाव है,यही स्नेह का भाव परिपुष्ट होकर वात्सल्य रस कहलाता है।

उदाहरण

बाल दसा सुख निरखि जसोदा,
पुनि पुनि नन्द बुलवाति
अँचरा-तर लै ढ़ाकी सूर, प्रभु
कौ दूध पियावति

भक्ति रस

इसका स्थायी भाव देव रति है। इस रस में ईश्वर कि अनुरक्ति और अनुराग का वर्णन होता हैं अर्थात इस रस में ईश्वर के प्रति प्रेम का वर्णन किया जाता है।

SuccessCDs

उदाहरण

अँसुवन जल सिंची-सिंची प्रेम-बेलि बोई
मीरा की लगन लागी, होनी हो सो होई

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर